बिलावल थाट का ऐतिहासिक अध्ययन – सितार वादन की गतों के संदर्भ में

कविता
पीएच॰डी॰ शोधार्थी
संगीत एवं ललित कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में मुख्य दस जनक थाट माने गए है इन दस थाटों में से एक मुख्य थाट बिलावल है, जो शुद्ध स्वरों से युक्त थाट माना गया है एवं आरंभिक विद्यार्थियों को सर्वप्रथम बिलावल थाट की शिक्षा दी जाती है। बिलावल थाट का आश्रय राग बिलावल माना गया है। बिलावल एक प्राचीन राग माना गया है, इस राग के लिए संस्कृत ग्रंथों में बेलावली, बेलावल, बिलावली आदि नाम दृष्टव्य होते है। कुछ विद्वानों का मानना है कि बेलावल अथवा शुद्ध बेलावल नाम अधिक प्राचीन नही है अतः 800–900 वर्ष पूर्व के ग्रंथों में इन नामों का वर्णन प्राप्त होता है एवं इनका पूर्ण उल्लेख 400–500 वर्ष पूर्व के ग्रंथों में ही प्राप्त होता है।

पंडित शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर में बेलावली को कुकुभ ग्राम राग की भाषा भागवर्धिनी से उत्पन्न माना है।

विद्यापति जी का केदार मेल आज के हिन्दुस्तानी बिलावल थाट के समरूप है एवं पंडित लोचन के केदार संस्थान के स्वर वर्तमान हिन्दुस्तानी बिलावल के समान है।

पंडित रामामात्य कृत स्वर मेलकलानिधि में बिलावली का उल्लेख प्राप्त होता है। पंडित जी के बिलावली में धैवत अंश स्वर है और इस स्वर पर न्यास किया जाता है। इन्होंने बेलावली का गायन समय प्रातःकाल माना है।

पंडित सोमनाथ ने अपने ग्रंथ राग विबोध में बिलावली को शुद्ध स्वरों से युक्त माना है। इन्होंने बेलावली के दो प्रकार–सम्पूर्ण बेलावली एवं औडव बेलावली बताए है। पंडित जी की बेलावली वर्तमान बिलावल से मिलती–जुलती है एवं इसका समय प्रातःगेय माना है। धैवत स्वर वादी माना है। औडव बेलावली में रिषभ अथवा पंचम स्वर वर्जित बताए है।

पंडित दामोदर कृत संगीत दर्पण में बेलावली का उल्लेख प्राप्त होता है। इनकी बिलावली पौरवी मूर्च्छना से उत्पन्न होती है। पंडित जी की बेलावली में अंश, ग्रह एवं न्यास धैवत पर है।

पंडित व्यंक्टमखी ने अपने ग्रंथ चतुर्दण्डिप्रकाशिका में बेलावली को श्री राग मेल से निष्पन्न माना है। श्री राग मेल आज के काफी थाट के समान। पंडित जी की बेलावली वर्तमान कालीन बिलावल से पृथक मालूम पड़ती है।

कुछ विद्वानों का कथन है कि बिलावल और बेलावली एक–दूसरे से पृथक मालूम पड़ते है परंतु राग तत्व विबोध अथवा राग दर्पण ग्रंथों में बेलावली शंकराभरण मेल से निष्पन्न मानी है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि वर्तमान बिलावल अथवा बेलावली में कुछ समानता देखने को मिलती है।

पंडित हृदयनारायण देव ने अपने ग्रंथ हृदयकौतुक में शुद्ध बेलावल का उल्लेख बताया है। पंडित जी ने अपने ग्रंथ में शुद्ध बेलावल और बेलावल में कोई भिन्नता स्पष्ट रूप में नही बताई।

पंडित अहोबल कृत संगीत पारिजात में बेलावली रागिनी का उल्लेख करते हुए तीव्र गंधार, निषाद शुद्ध का प्रयोग किया गया है। इसके आरोह में मध्यम और निषाद स्वर वर्जित है अथवा अवरोह में गंधार स्वर वर्जित है।

पुण्डरीक विट्ठल कृत चन्द्रोदय में बेलावली का वर्णन प्राप्त होता है और इसे पंडित जी ने केदार मेल के अंतर्गत माना है।

पंडित भावभट्ट कृत अनूप संगीत रत्नाकर में 16 प्रकार की बेलावली का उल्लेख प्राप्त होता है।

पंडित तुलाजीराव भौंसले कृत संगीतसारामृत में बेलावल का वर्णन प्राप्त होता है। इस बेलावल में शुद्ध सा ग म प, पंचश्रुति ऋषभ एवं धैवत, साधारण गंधार अथवा काकली निषाद स्वर प्रयोग में लाए गए है। इसके अलावा पंचम स्वर न्यास, ग्रह एवं अंश स्वर है अथवा इसका गायन समय प्रातःकाल माना गया है। इस प्रकार यह हमारे वर्तमान बिलावल से पृथक है।

मोहम्मद रजा कृत नगमाते आसफी में हनुमत मत के मतानुसार बिलावल को हिंदोल की रागिनी बताया है। इसके अतिरिक्त भरत मत के मतानुसार बिलावल को भैरव का पुत्र माना गया है। मोहम्मद रजा ने ही सर्वप्रथम बिलावल को शुद्ध थाट के रूप में स्वीकार किया।

पंडित भातखंडे जी कृत श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् में बिलावल को शुद्ध स्वरों से युक्त थाट माना है। पंडित जी ने बिलावल के स्वर दक्षिण के शंकराभरण मेल के समान माने है।

पंडित फिरोज फ्रामजी ने श्रुति स्वर–राग–शास्त्र में प्रचलित थाट बिलावल को मूर्च्छना पद्धति के वर्गीकरण के नियमानुसार जनक थाट केदार के अंतर्गत माना है।1

इस प्रकार कुछ विद्वानों का मानना है कि केदार मेल हमारे आज के बिलावल थाट के समान है परंतु कुछ विद्वान इस मत से सहमत नही है।

राग बिलावल

बिलावल अपने ही थाट का आश्रय राग है, बिलावल थाट को कर्नाटक संगीत में शंकराभरण मेल से जाना जाता है। कर्नाटक संगीत का राग बिलहरी हमारे बिलावल से कुछ मिलता–जुलता है, ऐसा विद्वानों का मानना है। इस राग के आरोह में मध्यम वर्ज्य और अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किए जाते है। इसकी जाति षाडव–सम्पूर्ण है। इसका वादी–संवादी धैवत–गंधार है। इसका गायन वादन समय दिन का प्रथम प्रहर है।

बिलावल को प्रातःकाल का राग माना जाता है। यह राग उत्तरांगवादी और अवरोह में विलक्षण रूप को होगा। जिस प्रकार संध्या के संधिप्रकाश रागों के बाद कल्याण गाया जाता है, उसी प्रकार प्रभातकालीन संधिप्रकाश रागों के बाद बिलावल गाया जाता है।2

बिलावल के अधिकतर प्रकार सम्पूर्ण जाति के हैं और इसके अतिरिक्त बिलावल के अधिकांश प्रकार उत्तरांगवादी के है। प्रत्येक प्रकार में बिलावल अंग प्रयोग करने से रागों के अंतरे में समानता देखने को मिलती है, इसीलिए सावधानी बरतनी पड़ती है।

बिलावल स्वरूप–

सा, रे सा, ग रे, ग प, ध नि ध, नि सां। सां नि ध प, ध म ग, म रे, सा।3

उत्तरांग– प प, ध नि ध, नि सां।4

बिलावल राग के अवरोह में विशेष रूप से ध म स्वरों की संगति मुख्य रूप से ली जाती है और इसके प्रयोग से राग की विचित्रता तथा सौंदर्य बढ़ता है।5

हिन्दुस्तानी संगीत में बिलावल थाट के प्रकार–बिहागड़ा, हंसध्वनि, बिलावल, बिहाग, देशकार, अल्हैया बिलावल, देवगिरी बिलावल, हेमन्त मांड, शंकरा इत्यादि देखने को मिलते है।

इसके अतिरिक्त इस थाट से संबंधित रागों पर मैंने सितार वादन की कुछ गते एकत्रित की है, जो इस प्रकार है–

राग – बिहागड़ा

गत – रजाखानी त्रिताल

स्थाई

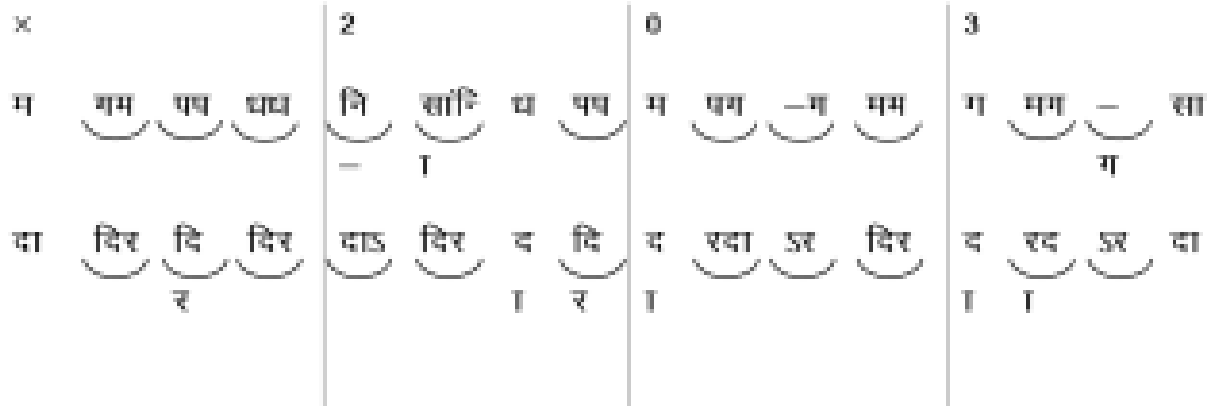

अंतरा

प	पि	–ि	पप	ग	मप	–	धऽ	नि	धसां	–सं	निसं	गं	गंि	–नि	सांसं
	न	न				प	।	।		ं	ं		न	।	ं
द	रदा	ऽर	दि	दा	रदा	ऽर	दि	द	रदा	ऽर	दिर	द	रदा	ऽर	दिर
गं	रेंमं	–मं	गंरें	सं	निनि	ध	प	प	निनि	प	मम	ग	मग	–रे	सासा
				ं	।				।						।
द	रदा	ऽर	दि	दा	दिर	दा	रा	द	दिर	दा	दिर	द	रदा	ऽर	दिर
।			र					।				।			

राग – बिलावल[5]

द्रुत गत – तीनताल

स्थाई

				2				0				3			
												ग	मप	ध	नि
												दा	दिर	दा	रा
सां	–	सां	नि	ध	निनि	ध	प	म	गग	म	रे				
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा				
												ग	पप	ध	प
												दा	दिर	दा	रा
म	गग	म	रे	ग	मम	पप	गग	म	मरे	–रे	सा				
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	रदा	–र	दा				

अंतरा

												ग	पप	ध	नि
												दा	दिर	दा	रा
सां	–	रें	सां	ग	रेंरें	गग	मम	रें	रेंसा	–सां	सा				
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	रदा	–र	दा				
												सां	रेंरें	सां	नि
												दा	दिर	दा	रा

राग – दुर्गा[16]

द्रुत गत – तीनताल

स्थाई

×				2				0				3			
						मप	धप	ग	मरे	–रे	सा	–	रेरे	सा	रे
						दिर	दिर	दा	रदा	–र	दा	ऽ	दिर	दा	रा
प	–	–	म	–म	प										
दा	ऽ	ऽ	दा	–र	दा										
						म	प	रे	मम	रेरे	पप	म	मरे	–रे	सा
						दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	रदा	–र	दा
सां	रेंरें	सां,	ध	–ध	प										
दा	दिर	दा,	दा	–र	दा										

अंतरा

						धध	पप	ध	धम	–म	प	ध	सांसां	रें	सां
						दिर	दिर	दा	रदा	–र	दा	दा	दिर	दा	रा
–	गंगं	रेंरें	गंगं	रें	रेंसां	–सां	सां	ध	रेंरें	सां	ध	–ध	ध,	प	धध
ऽ	दिर	दिर	दिर	दा	रदा	–र	दा	दा	दिर	दा,	दा	–र	दा,	दा	दिर
पप	म	–म	म	रें	सा										
दिर	दा	–र	दा	दा	रा										

राग – अल्हैया बिलावल[12]

रज़ाखानी गत, ताल – तीनताल

रचनाकार – पंडित रवि□ांकर

स्थाई

×				2				0				3			
												ग	पप	ध	नि
												दा	दिर	दा	रा
सां	–सां	सां	नि	ध	प	धध	धनि	ध–	धध	–प	ध	ग	पप	ध	नि
दा	–र	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा	दा	दिर	दा	रा
सां	–सां	सां	नि	धनि	नि	ध	प	ग	मग	पप	मम	ग–	गरे	–रे	सा
दा	–र	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	रा–	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
नि	सासा	ग	रे	ग	पप	धध	धनि	ध–	धप	–प	ध				
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा				

अंतरा

													रेंसां		
ध	—ध	नि	सां	—नि	रें	सां	—	नि	रेंरें	गंगं	रेंरें	गं	—नि	—नि	सां
दा	—र	दा	रा	—रा	दा	दा	—	दा	दिर	दिर	दि र	दा	—र	—र	दा

सां															
नि	रेंरें	सां	नि	ध	नि	ध	प	ग	मग	पप	गम	ग—	गरे	—रे	सा
दा	दिर	दा	रा	दा	—	दा	रा	दा	रा	दिर	दि र	दा	रदा	—र	दा

नि	सासा	ग	रे	ग	प	धध	धनि	ध—	धप	—प	ध
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दि र	दिर	दा	रदा	—र	दा

राग – देवगिरी बिलावल[13]

द्रुत गत – तीनताल

स्थाई

×				2				0				3			
						गग	मम	रे—	रे.रे	सानि	सा	ध—	नि.ध	—ध	प
						दिर	दिर	दा	र.दा	—र	दा	दा—	र.दा	—र	दा
ग	—	ग	रे	ग	प										
दा	दिर	दा	रा	दा	रा										

अंतरा

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. शोभा माथुर, भारतीय संगीत में मेल अथवा थाट का ऐतिहासिक अध्ययन, वि व प्रका ान, पृ.–91
2. पं. वि.ना. भातखंडे, भातखंडे संगीत भाास्त्र भाग–1, संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.), पृ.–150
3. वही, पृ.–154
4. वही, पृ.–154
5. वही, पृ.–155
6. संगीत कला विहार, अप्रैल 1957, अ.भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, पृ.–59–60
7. कु. शंकुतला देशपांडे, संगीत कला विहार, फरवरी 1983, अ.भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, बम्बई, पृ.–12
8. डॉ. बिरेन्द्र नाथ मिश्र, सितार प्रबंध, कला प्रकाशन, 2011, बी.एच.यू., वाराणसी, पृ.–92
9. वही, पृ.–95
10. वही, पृ.–97
11. वही, पृ.–99
12. डॉ. वी.एस. सुदीप राय, जहान–ए–सितार, सितार वादन की विभिन्न भौलियों का उद्भव एवं विकास, कनिश्क पब्लि ार्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004, पृ.–169
13. Prof. Vinay Kumar Aggarwal, Dr. Alka Nagpal, Sitar and Its compositions, Sanjay Prakasha, Delhi, 2004, page-108
14. वही, पृ.–116
15. वही, पृ.–119
    वही, पृ.–123